संवित् गुरु विजयते

ब्रह्म स्पर्श

सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शं अत्यन्तं सुखमश्नुते ।

–गीता ६.२८

॥ श्री दक्षिणामूर्ति ॥

॥ श्री शंकराचार्य ॥

Gurupurnima Mahotshv 2001

श्री गुरुपूर्णिमा - संवित् - प्रसाद

विक्रम सं. २०५८

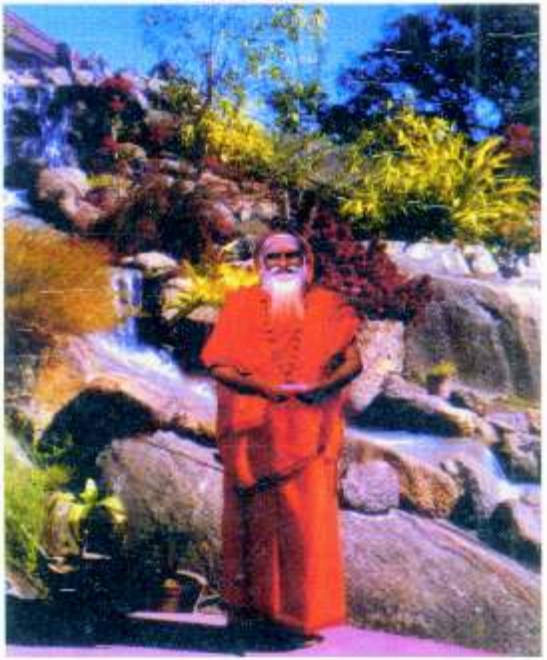

परम श्रद्धेय अनन्त श्रीविभूषित श्रीमत् परमहंस परिव्राजक संविदाचार्य

पूज्य स्वामी ईश्वरानन्द गिरिजी महाराज

(सन्त सरोवर, आबू पर्वत)

धर्मतत्त्वप्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।
मुमुक्षून् श्वयुरान् देयाद् ईश्वरानन्दगिरिर्नः ॥

श्रीरस्तु पराम्बा

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

श्री अंबाजी में ४ जुलाई सन् २००१ को आयोजित
श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव में प्रकाशित व वितरित ।
गुरुपूर्णिमा - महोत्सव समिति, अहमदाबाद

Gurupurnima Mahotshv 2001

अथर्ववेदीय[illegible]

पृथिवीसूक्तम्

अस्य पृथिवीसूक्तमन्त्रस्य अथर्वा ऋषिः त्रिष्टुप्-जगती-शक्वर्यः छन्दांसि, भूमिः देवता, भूदेवीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ॥१॥

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
गवामश्वानां वयसश्च विष्ठा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु ॥२॥

यार्णवेऽधि सलिलमग्र आसीद् यां मायाभिरन्वचरन् मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन् सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे ॥३॥

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् ॥४॥

यत्ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः।
तासु नो धेह्यभि नः पवस्व, माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु ॥५॥

त्वज्जातास्त्वयि चरन्ति मर्त्यास्, त्वं बिभर्षि द्विपदस्त्वं चतुष्पदः।
तवेमे पृथिवि पञ्च मानवा येभ्यो ज्योतिरमृतं मर्त्येभ्यः।
उद्यन् सूर्यो रश्मिभिरातनोति ॥६॥

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥७॥

भावार्थ

सत्य, ऋत, दीक्षा, तप, ब्रह्म और यज्ञ इस पृथिवी को धारण करते हैं। भूत और भव्य की स्वामिनी यह पृथिवी हमारे लोक को वीर्यवान् कर दे। (१)

जिस पृथिवी पर प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों ने प्रशस्त कर्म किया, जिसमें देवों ने असुरों को पराजित कर दिया, जो पशु, अश्व, पक्षी आदि प्राणियों की प्रतिष्ठा है, वह हमें ऐश्वर्य, वर्चस्व प्रदान करे। (२)

जो पृथिवी पहले समुद्र में जल के भीतर थी, मनीषियों ने जिसे बुद्धि द्वारा प्राप्त किया और जिस पृथिवी का अमृत-हृदय सत्य से आवृत एवं परम व्योम में स्थित है, वह भूमि हमारे उत्तम राष्ट्र में दीप्ति और बल दे। (३)

पृथिवी! तुम्हारे गिरि, हिम से ढके पर्वत और वन हमारे लिए सुखकर हों। भूरी, काली, लाल, अनेक रूपोंवाली, स्थिर और इन्द्र द्वारा रक्षित इस विशाल भूमि पर अजेय, अहिंसित तथा अक्षत मैं अधिष्ठित होऊँ। (४)

पृथिवी! जो तुम्हारे मध्य और नाभियों से उत्पन्न विविध ऊर्जा हैं उन सब में मुझे स्थापित करो। हमारे लिए पवित्र करो। भूमि माँ है। मैं पृथिवी का पुत्र हूँ। वह पिता पर्जन्य हमारी रक्षा करें। (५)

तुमसे उत्पन्न मनुष्य तुम्हारे ऊपर विचरण करते हैं, तुम मनुष्य और पशुओं को धारण करती हो। पृथिवी! सभी मानव तुम्हारे हैं जिनके लिए उगता हुआ सूर्य रश्मियों द्वारा अमृतज्योति का विस्तार करता है। (६)

विभिन्न धर्मोंवाले, विविध भाषाई मनुष्यों को घर जैसे आश्रय में एकत्रित करनेवाली पृथिवी, स्थिर तथा अचपल गाय के सदृश, हमारे लिए संपत्ति की हजारों धाराएँ दुह दे। (७)

Gurupurnima Mahotshv 2002

श्रीवेदव्यासो विजयते

श्री गुरुपूर्णिमा
संवित्
प्रसाद - पत्र

सच्चिन्मुद्रांचितकरं
व्यासं मतिमतां वरम्।
सर्वशास्त्रप्रणेतारं
व्यासेदु द्वैपायनं गुरुम्।।

"जीवन की सहजप्रक्रिया से वेदान्तनिष्ठा को बढ़ाना प्रत्येक साधक का परम कर्त्तव्य है। इसी से व्यक्ति और विश्व दोनों का विकास सही दिशा में हो सकेगा।"

स्वामी ईश्वरानन्द गिरि

[illegible]
श्री गुरुपूर्णिमा [illegible]
दिनांक : [illegible]

Gurupurnima Mahotshv 2002

श्रद्धासूक्तम्

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः ।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ॥१॥

प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे दिदासतः ।
प्रियं भोजेषु यज्वस्विदं म उदितं कृधि ॥२॥

यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे ।
एवं भोजेषु यज्वस्वस्माकमुदितं कृधि ॥३॥

श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते ।
श्रद्धां हृदय्ययाकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु ॥४॥

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि ।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥५॥

श्रद्धा देवान् अधिवस्ते, श्रद्धा विश्वमिदं जगत् ।
श्रद्धां कामस्य मातरम् हविषा वर्धयामसि ॥६॥

श्रद्धया देवो देवत्वमश्नुते, श्रद्धा प्रतिष्ठा लोकस्य देवी ।
सा नो जुषाणोप यज्ञमागात्, कामवत्सामृतं दुहाना ॥७॥

श्रद्धा देवी प्रथमजा ऋतस्य विश्वस्य भर्त्री जगतः प्रतिष्ठा ।
तां श्रद्धां हविषा यजामहे सा नो लोकममृतं दधातु ॥८॥

श्रद्धासूक्त

भावार्थ

श्रद्धा से अग्नि प्रज्वलित की जाती है। श्रद्धा से ही यज्ञ में आहुति दी जाती है। समस्त ऐश्वर्य की शिरोमणि श्रद्धा की वाणी से हम प्रार्थना करते हैं॥१॥

हे श्रद्धा देवी! दान देने वाले एवं दिलाने वाले की इच्छाओं को आप पूर्ण करना। यज्ञमय कर्मों द्वारा उत्तम भोग के इच्छुक मेरा कल्याण करना॥२॥

श्रद्धा के प्रयोग से ही उग्र असुरों को भी देवों ने पराजित किया था। इसी प्रकार आपके द्वारा हमारी भी उन्नति हो॥३॥

श्रद्धा की उपासना देवगण, यज्ञ के यजमान, पुण्यवासी लोग करते हैं। हृदय में निहित श्रद्धा को संकल्प के द्वारा प्रकट करने पर सारा ऐश्वर्य प्राप्त होता है॥४॥

प्रातः, मध्याह्न एवं सूर्यास्त के समयों में नियमित रूप से हम श्रद्धा प्राप्ति निमित्त यज्ञ करते हैं॥५॥

श्रद्धा देवों में निवास करती है। सारा विश्व श्रद्धा से ही बना है। समस्त उपलब्धियों की जननी श्रद्धा का त्यागपूर्ण भक्ति से वर्धन करते हैं॥६॥

श्रद्धा के द्वारा जीव को देवत्व की प्राप्ति होती है। श्रद्धा देवी की सर्वलोक प्रतिष्ठा है। हमारे द्वारा सेवित हो यह श्रद्धा हमारे जीवन यज्ञ में उपस्थित रहे। जैसे बछड़ों के बीच अमृत वर्षिणी कामधेनु गाय॥७॥

विश्वपूर्वक सत्य से सर्वप्रथम श्रद्धा प्रकट हुई थी। उसी से विश्व का पालन और प्रतिष्ठा है। उत्तम सामग्री से उस श्रद्धा की हम आराधना करते हैं। वह हमें अमृत लोक प्रदान करे॥८॥

Gurupurnima
Mahotshv
2003

श्री गुरु पूर्णिमा संवित् प्रसाद पत्र

विक्रमाब्द 2060, सन् 13 जुलाई 2003

सौराष्ट्रदेशे वसुधावकाशे,
ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम् ।
भक्तिप्रदानाय कृतावतारं,
तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ।।

- आद्य शंकराचार्य

श्री गुरुपूर्णिमा संवित् महोत्सवसमिति
एवं
समस्त गुजरात-संवित्-साधक
द्वारा प्रकाशित व वितरित : श्री गुरुपूर्णिमा वि. 2060, 13 जुलाई सन् 2003

"जय सोमनाथ"

प्रभास-क्षेत्र-वन्दना

जय सोमनाथ-प्रिय स्वप्रकाश ।
जय भारतप्राण वसुधावकाश ।। ध्रुव ।।
श्रीकृष्णलीला-विलयालयाय ।
सरिता-सागर-संगमाय प्रणामः ।। २ ।।
श्रीशंकराचार्य-नुतपुण्यकीर्ते ।
शतदैत्यघातापि घटितात्मभूते ।। ३ ।।
शशिशापमोक्षाय धृतदीक्षागुरवे ।
शिवभक्तिफलसिद्धी नमः कल्पतरवे ।। ४ ।।
कैलास-रामदेवगृहशोभिताय ।
श्रीराष्ट्रधाम्ने शतशः प्रणामः ।। ५ ।।

गुरूपदेश

जपविधान

Gurupurnima Mahotshv 2004

श्री गुरुपूर्णिमा संवित् प्रसाद पत्र

विक्रमाब्द 2061, सन् 2 जुलाई, 2004

श्रीत्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग महाक्षेत्र

महाराष्ट्र

प्रकाशक

श्रीगुरुपूर्णिमा संवित् महोत्सव समिति

संवित् साधनायन, संतसरोवर, आबू पर्वत – 307501

श्री गुरु प्रसाद

1. विश्व को भेद की दृष्टि से देखो तो यह बन्धन का कारण बनता है। विश्व को विश्वेश्वर का ऐश्वर्य–प्रदर्शन मानकर स्वीकार करने पर जीवन एक नृत्य बन जाता है। विश्वेश्वर जिस कला का प्रदर्शन करते हैं, उसी का नाम संवित् है।
2. चैतन्य शक्ति संवित् ही समस्त प्राणियों का सर्जन करती हुई उन सब की सूत्रात्मा बनती है। अतः हर प्राणी को संवित् से युक्त देखना ही सही दृष्टि है।
3. इस दृष्टि की प्राप्ति सत्संग से ही होती है। प्रामाणिक अध्यात्म शास्त्र एवं महापुरुषों के संग से उनमें श्रद्धा उत्पन्न होती है। श्रद्धा विशुद्ध कामनाओं की जननी है
4. कामनाएँ जीवन वृक्ष के पर्ण हैं। वे नहीं हो तो जीवन समृद्ध, सुन्दर और सुखप्रद नहीं हो पाएगा। सदाचार से अशुद्ध कामनाओं का निवारण करते हुए विशुद्ध कामनाओं को उपासना द्वारा संस्कृत व सबल बनाने की चेष्टा करो। तभी जीवन कलात्मक बनेगा।
5. जगत सृष्टि–पालन–विलय रूपी ईश्वर–लीला के अन्तःपाती दो और गुण हैं– निग्रह और अनुग्रह। ईश्वर–उपासना से जीव ईश्वर–अनुग्रह के सम्मुख होता है।
6. ईश्वर अनुग्रह से ही ज्ञान भक्ति और अद्वैत में गति सम्भव है।
7. प्रतिदिन की उपासना में पूजन मन्त्र, जप और इष्ट देव का ध्यान इन तीनों का पालन होने से शारीरिक, प्राणिक और मानसिक अध्यात्म–विकास होता है।
8. चित् स्वरूप आत्मा विश्वदर्शन की इच्छा से अपने आप को संकुचित व केन्द्रित करती है तो चित्त व मन का निर्माण होता है। जब तक चित्त अपने आप में रहता है तब तक माया का आवरण हटता नहीं। ज्ञानी पुरुष चित्त को चित् रूप से देखता है तो विश्व एक नाटक रूप से दिखाई देता है, जिसके लिये ही आत्मा ने मन का मुखौटा पहना था। सत्य दर्शन के लिये इस मुखौटे को उतारना पड़ता है। यही योग है। योगाभ्यास में ईश्वर–प्रसाद प्राप्त हो जाता है।

Gurupurnima
Mahotshv
2004

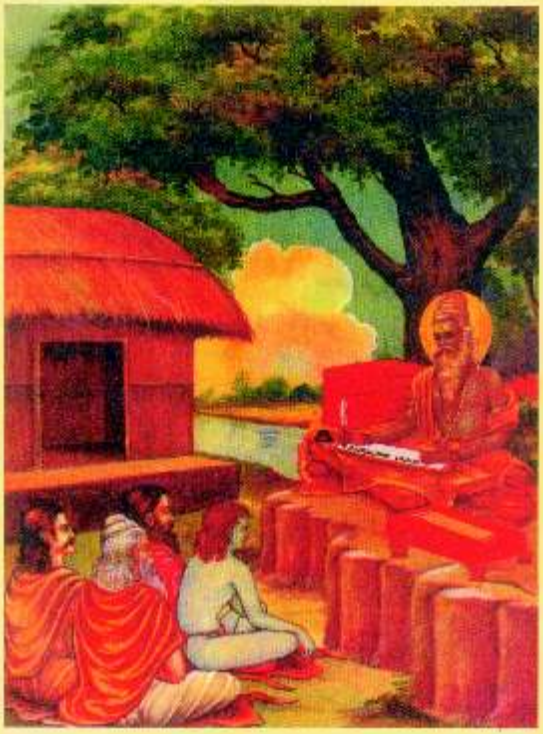

महर्षि वेद व्यास वचन

1. जो फल सत्ययुग में दस वर्ष की तपस्या, ब्रह्मचर्य, जप एवं जाप आदि नियम से मिलता है, उसे त्रेता में एक वर्ष, द्वापर में एक मास और कलियुग में मात्र एक दिन-रात में मनुष्य प्राप्त कर लेता है। इसी कारण कलियुग को मैंने श्रेष्ठ कहा है।

2. सर्वश्रेष्ठ पुरुषों के सामने यदि अपने किये हुए पाप को पश्चात्ताप पूर्वक प्रकट किया जाए तो वह उस पाप के परिणाम से शीघ्र मुक्त हो जाता है।

3. जिस कर्म से लोगों का हित नहीं होता, अथवा जिसके करने से स्वयं अपने को लज्जा महसूस होती है, वह कर्म कभी नहीं करना चाहिये। सभी शास्त्रों में मैंने यही बताया कि परोपकार पुण्य है और पर पीड़ा पाप है।

4. अकेले स्वादिष्ट भोजन न करें, अकेले किसी कार्य को सिद्ध न करें, अकेले रास्ता न चलें और जहाँ सभी सो रहे हों उनके बीच अकेला जागता न रहे।

5. जिसके कार्य में शीत-उष्ण, भय-प्रीति, समृद्धि-असमृद्धि से कोई विघ्न-बाधा नहीं पहुंचती, वही पण्डित कहलाता है।

6. दूसरों से ईर्ष्या व घृणा करने वाले, असन्तुष्ट, क्रोधी, हर बात में शंका करने वाले और दूसरे के धन से जीविका निर्वाह करने वाले - ये छहों सदा दुःखी रहते हैं।

7. जो कुछ दूसरे के अधीन है वह सब दुःख रूप है। जो कुछ अपने अधीन है वही सुख रूप है। सुख-दुःख का यही संक्षेप लक्षण जानना चाहिये।

8. मैं मानता हूँ कि केवल ऊँचा कुल किसी की प्रतिष्ठा सिद्ध नहीं करता जब तक आचरणहीन मनुष्य है। नीच कुल में उत्पन्न भी सदाचार के कारण विशिष्ट माने जाते हैं।

9. सुख हो या दुःख, प्रिय हो या अप्रिय, जो जिस समय जैसा प्राप्त हो, उसे निराशाहीन मन से आदर पूर्वक अपनाना।

10. जो जगत की सृष्टि-स्थिति-लय का मूल कारण है, उसे ब्रह्म कहते हैं। ब्रह्म की जिज्ञासा करना और उसके लिए हर प्रकार से साधना करना हर मनुष्य का परम कर्तव्य है।

Gurupurnima Mahotshv 2005

श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव

संवित्-प्रसाद

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य

स्वामी श्री ईश्वरानन्द गिरि महाराज

संवित् साधनायन, आबू पर्वत

की शुभकामना के साथ

ज्योतिर्लिंग श्रीमल्लिकार्जुन महादेव

महाक्षेत्र, श्रीशैल में

महोत्सव समिति द्वारा वितरित

आषाढ़ पूर्णिमा वि.सं. २०६२ सन् २१.७.२००५

शिवानन्दलहरी

[illegible]

श्री शैल भजन

[illegible]

Gurupurnima Mahotshv 2005

श्रीशैल मल्लिकार्जुन सुप्रभातम्

श्री अम्बाजी स्तोत्रम्

श्रीमल्लिकार्जुन मंगल शासनम्

श्री अम्बाजी स्मरणम्

श्री मल्लिकार्जुन गीतम्

Gurupurnima Mahotshv 2006

श्रीमहाकालाष्टकम्

सद्योजातं हावन्तीशं शर्वं दारिद्र्यनाशनम्।
मृत्युंजयं महाकालं ज्योतिर्लिंगमुपाश्रये ।।१।।
क्षिप्रप्रियं भवं वाम-देवं त्रिमलनाशनम्।
मृत्युंजयं महाकालं ज्योतिर्लिंगमुपाश्रये ।।२।।
रुद्रं पावक संकाशं अघोरं अघनाशनम्।
मृत्युंजयं महाकालं ज्योतिर्लिंगमुपाश्रये ।।३।।
उग्रं उज्जयिनीशं तत्-पुरुषं पुरनाशनम्।
मृत्युंजयं महाकालं ज्योतिर्लिंगमुपाश्रये ।।४।।
चिताभस्मधरं भीमं संसारभयनाशनम्।
मृत्युंजयं महाकालं ज्योतिर्लिंगमुपाश्रये ।।५।।
ईशानं शतसूर्याभं आधिव्याधिविनाशनम्।
मृत्युंजयं महाकालं ज्योतिर्लिंगमुपाश्रये ।।६।।
महादेवं शशिकोटि-शीतलं तापनाशनम्।
मृत्युंजयं महाकालं ज्योतिर्लिंगमुपाश्रये ।।७।।
पशूनां पतिमात्मानं पूर्णं व्यामोहनाशनम्।
मृत्युंजयं महाकालं ज्योतिर्लिंगमुपाश्रये ।।८।।

श्री गुरु पूर्णिमा संवित् प्रसाद

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य

पूज्यश्री स्वामी ईश्वरानन्द गिरि महाराज

सन्त सरोवर, आबू पर्वत

की संन्यास सुवर्ण जयन्ती, अमृतोत्सव उद्घाटन के अवसर पर
श्री गुरुपूर्णिमा उत्सव समिति, द्वारा वितरित

卐 श्री महाकाल, उज्जैन - 7 जुलाई 2006 卐

Gurupurnima Mahotshv 2006

महाकालक्षेत्र माहात्म्यम्

दशयोजनविस्तारे क्षेत्रे मोक्षप्रदे कलौ।
अवन्तीति श्रुते ज्योतिर्लिंगरूपः शिवः स्थितः॥१॥
क्षिप्रा - नवनदी - नीलगंगा - गंधवतीति च।
नदीचतुष्टयाम्भसि स्नानानन्दः सदाशिवः॥२॥
रुद्रैकादशसंयुक्तो भास्करद्वादशान्वितः।
विनायकषट्संगोतो दशविष्णुसमावृतः॥३॥
चतुर्विंशति देव्यश्च भैरवादिसुपूजितः।
चतुरशीतिलिंगानां साऽऽश्चर्यमुदान्वितः॥४॥
शंजनो यत्रलीलया। मृत्युश्च त्रिपुरस्ततः।
उज्जयिनीति विख्याता महाकालप्रियः पुरः॥५॥
विश्वकर्मानिर्मिता या नगरी लयवर्जिता।
कुशासने स्थितो विष्णुः यत्रशासनमाकरोत्॥६॥
स्वर्णशृंगा प्रतिकल्पा विशाला च कुशस्थली।
पद्मावती कुमुद्वती प्रोक्तामरावतीति च॥७॥
उज्जयिनी महामोक्षदायिनी पंचलक्षणी।
अवन्त्या नवनामानि यः स्मरेत् मुक्तिभाग्भवेत्॥८॥

श्री महाकाल वंदना

अवन्तिकायां विहितावतारं
मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं
वन्दे महाकालमहासुरेशम्॥
- आद्य श्री शंकराचार्य

महाकाल नाम स्मरणम्

शंभो शंकर शशांकभाल।
शिव-शिव हर-हर जय महाकाल॥ ध्रुव॥
त्रिपुरसंहारि रुद्र कराल।
त्रिशूलधारि जय महाकाल॥१॥
ज्योतिर्मय-शिवलिंग-विशाल।
उज्जयिनी-भव जय महाकाल॥२॥
क्षिप्राविहारि फणि-मणि-माल।
कुम्भामृतझरि जय महाकाल॥३॥
हरसिद्धीवर यति जन पाल।
संविद्वनीश्वर महाकाल॥४॥

Gurupurnima Mahotshv 2006

Gurupurnima Mahotshv 2006

ॐ नमो भगवते श्रीमन् नृसिंहगिरि स्वामिने देशिकेन्द्राय नमः

जगद् विलय - संजात - सुधैकरसनिर्भरे /
त्वदब्धौ त्वां महात्मानम् अर्चन्नासीय सर्वदा //

समस्त जगत् को समाधि में विलय करके
जो परमार्थ-अमृत-रसमय सुख आविर्भूत होता है,
उसका आप सागर हैं। हे महात्मन् ! उसी रूप में
आप की मैं सदा पूजन करता रहूँ !।

- श्रीमदुत्पलदेवाचार्य

पचास वर्ष पूर्व जिनके कृपाकरों से मेरे बन्धनों का कर्तन हुआ था,
जिनके मुखपद्म से निःसृत तारक-ब्रह्माक्षर-मन्त्रामृत मेरे हृदय में प्रविष्ट हुआ था,
जिनकी पुण्यस्मृति को लेकर इस निवेदपथ पर चलता आया हूँ -
उन श्री गुरुचरणों को यह जयन्ती समर्पित है।

- ईश्वरानन्द गिरि

संविदेव गुरुरूपा संविन्नो परदेवता ।
संविदेवास्य राष्ट्रस्य विश्वस्य च परायणम्।।

संवित् ही गुरुरूप से हमें अपनाती है, संवित् हमारा परमाराध्य है। इस भारत राष्ट्र की ही नहीं, अपितु सारे विश्व की एक मात्र परमगति संवित् ही है।

इसी परागति को संवित् - साधनायन के रूप में अपना कर बहुत साल हम साथ चलें। आगे अनेक युग चलते रहेंगे। कोई भी सत्ता हमें रोक नहीं सकती। हमने त्यक्तनिद्रा, अन्तःपुरसंचारिणी, संविद्देवी के नूपुर-कंकणों की उन्मादिनीध्वनि को सुन लिया। अब रुकें कैसे? अब रहा क्या? सिवा उनका दर्शन, सिवा उनका अनावृत द्वार। अमृतमय होकर उसकी सेवा में रत रहेंगें।

आशीस के साथ
स्वामी ईश्वरानन्दगिरि

आषाढ़ पूर्णिमा, वि.सं. 2063

Gurupurnima Mahotshv 2007

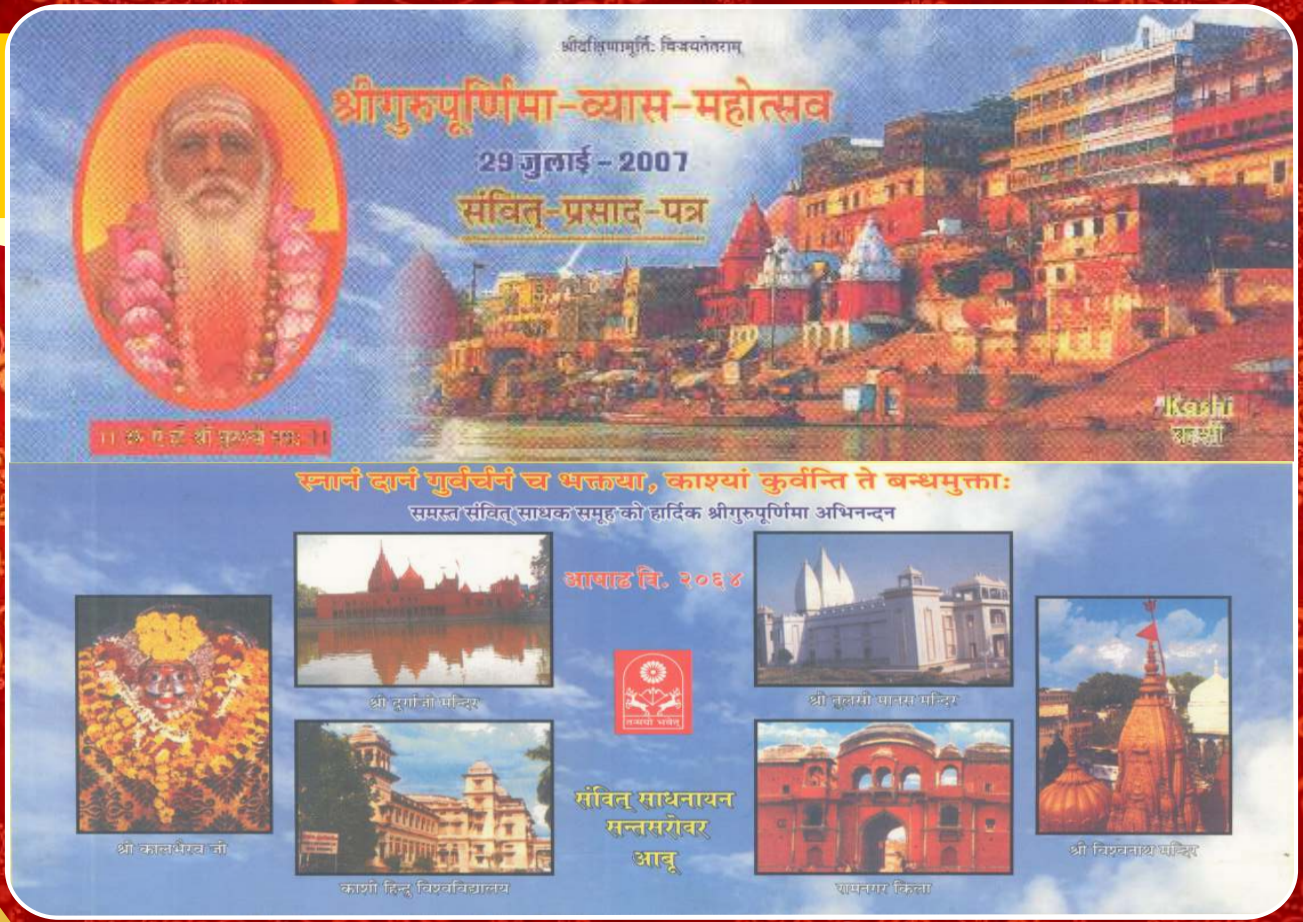

Gurupurnima
Mahotshv
2007

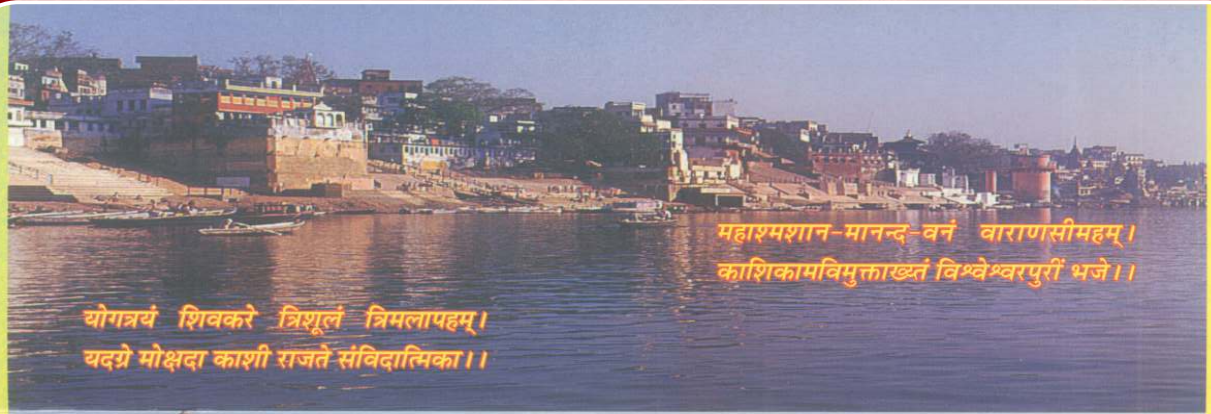

महाश्मशान-मानन्द-वनं वाराणसीमहम्।
काशिकामविमुक्ताख्यं विश्वेश्वरपुरीं भजे।।

योगत्रयं शिवकरे त्रिशूलं त्रिमलापहम्।
यदग्रे मोक्षदा काशी राजते संविदात्मिका।।

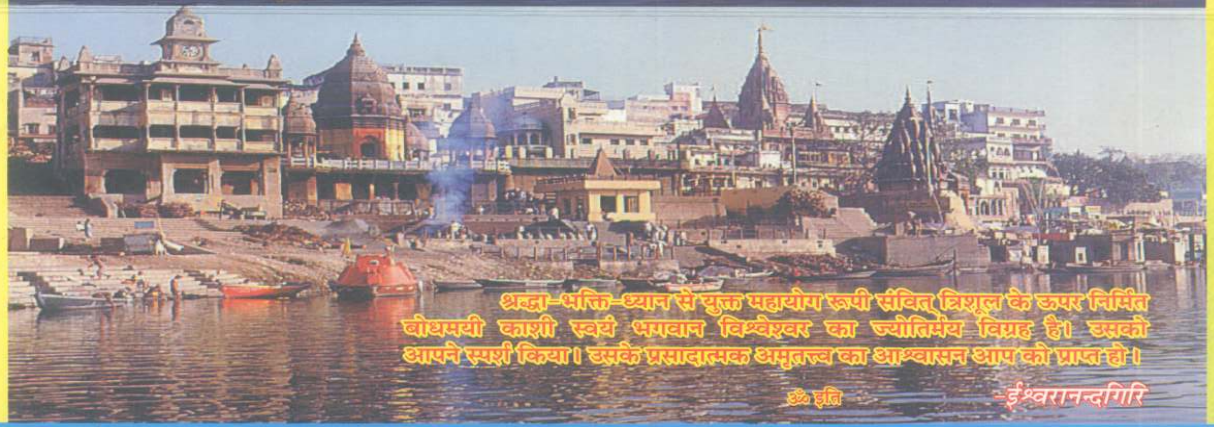

श्रद्धा-भक्ति-ध्यान से युक्त महायोग रूपी संवित् त्रिशूल के ऊपर निर्मित बोधमयी काशी स्वयं भगवान विश्वेश्वर का ज्योतिर्मय विग्रह है। उसको आपने स्पर्श किया। उसके प्रसादात्मक अमृतत्त्व का आश्वासन आप को प्राप्त हो।

ॐ इति

-ईश्वरानन्दगिरि

ब्रह्मविद्या परंपरा-गुरु पादाश्रितान् जनान्।
संवित् साधक प्रवरान् विश्वेश्वरः सदावतु ।।

Gurupurnima Mahotshv 2008

श्री दक्षिणामूर्तिः विजयतेतराम्

श्रीगुरु पूर्णिमा - व्यास महोत्सव

सेतुबंध रामेश्वरम्

विक्रम सं. २०६५ - 18 जुलाई, 2008

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य परम पूज्य

स्वामी श्री ईश्वरानन्द गिरिजी महाराज

का संवित्-सत्र-प्रसाद

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं गुरुभ्यो नमः ॥

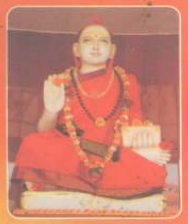

आद्यगुरु श्री शंकराचार्य

रामेश्वर भजन

रामेश्वरं भज रामेश्वरम्
रघुनाथ-नाथ रामेश्वरम्।। ध्रुव

दुर्गार्णव-भव-सेतुनिबंधम्
दुरित विजय वर दान प्रसिद्धम् ।।
रामेश्वरं भज रामेश्वरम्

पावन तीर्थ-शतावृत क्षेत्रं
पर्वतवर्धिन्याश्लिष्ट गात्रं
सागर कल्लोल ह्रींकारलोलं
संवित् परायण जनपरिपालम् ।।
रामेश्वरं भज रामेश्वरम्

श्रीपर्वतवर्धिनी-श्रीरामेश्वर

अमृतसेतु-ध्यान

वह्निस्थानं शक्तिमूलं सद्ब्रह्मग्रन्थिभेदनम्।
वेदारं भुवनाधारं भुजंगशयनं भजे।। 1 ।।

विष्णुग्रन्थिविनिर्मुक्तं चिदादित्यं हृदम्बरम्।
द्वादशारमहापद्मं अनाहतालयं श्रये ।। 2 ।।

भ्रुकुटी मध्यकूटस्थं रुद्ररोधविदारणम्
द्विदलं चिन्तनातीतं आज्ञाकमलमाविशे।। 3।।

नमः शिवाय शान्ताय द्वादशान्ताय शंभवे
संविदानन्दकन्दाय सोमायामृतसेतवे
संविद्गुरुस्वरूपाय सोमायामृतसेतवे ।।4।।

स्वामी श्री नरसिंह गिरिजी महाराज

समस्त संवित् साधक समूह को हार्दिक श्रीगुरु पूर्णिमा अभिनन्दन - Gurupoornima Greetings to all Samvit Sadhakas

संवित् साधनायन, सन्त सरोवर, आबू पर्वत - 307501

Gurupurnima Mahotshv 2008

भगवान श्रीदक्षिणामूर्ति

श्रीदक्षिणामूर्ति श्लोका:

शान्तं शारद चन्द्रकान्ति धवलं चन्द्राभिरामाननं
चन्द्रार्कोपमकान्ति कुण्डलधरं शास्तार मिष्टार्थदम् ।
वीणां पुस्तकमक्षसूत्रवलयं व्याख्यानमुद्रां करै:
बिभ्राणं गुरुपुंगवं हृदि सदा श्रीदक्षिणास्यं भजे ।।

उद्यद्भास्कर संनिभं त्रिनयनं श्वेतांगरागप्रभं
बालं मौञ्जिधरं प्रसन्नवदनं न्यग्रोधमूले स्थितम् ।
भालाक्षं मृगशावकस्थितिकरं चिन्मुद्रितं चेतरे ।
भक्तानामभयप्रदं च वरदं श्रीदक्षिणास्यं भजे ।।2।।

श्रीकान्तद्रुहिणोपमन्युतपन-स्कन्देन्द्रनन्द्यादय:
प्राचीना गुरवोऽपि यस्य करुणालेशाद्‌गता गौरवम् ।
तं सर्वादिगुरुं मनोज्ञवपुषं मन्दस्मितालंकृतं
चिन्मुद्रांचित मुग्धपाणिकमलं श्रीदक्षिणास्यं भजे ।।3 ।।

वामोरूपरि संस्थितां गिरिसुतां अन्योन्यमालिंगितां
श्यामामुत्पलधारिणीं शशिनिभां चालोक यन्तं शिवम्
आश्लिष्टेन करेण पुस्तकमथो कुंभं सुधापूरितं
मुद्रामक्षवटीं दधानमपरै: श्री दक्षिणास्यं भजे ।।4।।

श्रीरामनाथस्तुति:

भगवान श्रीवेदव्यास

श्रीरामपूजितपदाम्बुज शूलपाणे
श्रीतीर्थराजकृतवास कृपाम्बुराशे ।
श्रीसेतुबंधकरणाय कृपान्तरंग
श्रीरामनाथ परिपालाय मामनाथम् ।।1 ।।

नम्राघवृन्द-विनिवारण-बद्धदीक्ष
शैलाधिराजतनया-परिरब्धवर्ष्मन् ।
श्रीशंकरादिगुरुवर्यनिषेविताङ्घ्रे:
श्रीरामनाथ परिपालाय मामनाथम् ।।2 ।।

शूरान्तकेभवदनाश्रितपार्श्वभाग
क्रूरारिवर्गविजयप्रद भालनेत्र ।
साराखिलागमतदन्तपुराणपंक्ते:
श्रीरामनाथ परिपालाय मामनाथम् ।।3 ।।

शब्दादिमेषु विषयेषु सुरालयेषु
रागादिगंधरहितान्निजभक्तपूगान् ।
कुर्वाण कामदहनाक्षिलसल्ललाट
श्रीरामनाथ परिपालाय मामनाथम् ।।4 ।।

शिवराम- विजयस्तोत्रम्

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो
त्रिविधताप- निवारण हे विभो ।
त्रिभुवनेश्वर राघव पाहि मां
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।।1 ।।

कमललोचन राम दयाकर
हर गुरो गजचर्मकृताम्बर ।
दशरथात्मज शंकर पाहि मां
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।।2 ।।

जय विभीषणवल्लभ भूपते
दशमुखान्तक पुण्यपयोनिधे ।
जय सरित्‌धृतशेखर धूर्जटे
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।।3 ।।

भव विमोचन भीम भयापह
हिमगिरीन्द्रकृतालय पालय ।
जनकजारत राघव रक्ष मां
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।।4 ।।

अवनिमण्डलमंगल श्यामल
जलदसुन्दर राम रमापते ।
त्रिपुरनाशन पर्वतजापते
शिवहरे विजयं कुरु मे वरम् ।।5 ।।

प्रातरुत्थाय यो भक्त्या
पठेदेकाग्रमानस: ।
विजयो जायते तस्य
स्वेष्टसान्निध्यमाप्नुयात् ।।

हनुमत्कृत सीतारामस्तवम्

विष्टरे पुष्पके नित्यं निविष्टाय महात्मने ।
प्रहृष्टवानरानीक-जुष्ट पादायते नम: ।।1 ।।

निष्पिष्टराक्षसेन्द्राय जगदिष्टविधायिने ।
भक्तार्तिहारिणे तुभ्यं सीताया: पतये नम: ।।2।।

अनेकोर्मिसमाधूत- समुद्रमदहारिणे ।
नमोस्त्वहल्यासंताप- हारिणे चापहारिणे ।।3।।

रक्षमां वेदवचसां - अप्यगोचर राघव ।
पाहि मां कृपया राम शरणं त्वामुपैम्यहम् ।।4।।

जानकि ! त्वां नमस्यामि सर्वपाप प्रणाशिनीम् ।
दारिद्र्य-भयसंहर्त्री भक्ताभीष्टप्रदायिनीम् ।।5।।

विदेहराजकुमारीं राघवानन्द कारिणीम् ।
भूमेर्दुहितरं विद्यां नमामि प्रकृतिं शिवाम् ।।6।।

पौलास्त्यैश्वर्यनाशिनीं तपस्वीनां सरस्वतीम् ।
पतिव्रताधुरीणां त्वां नमामि जनकात्मजाम् ।।7।।

अनुग्रहपरां ऋद्धिं सिद्धिदां हरिवल्लभाम् ।
आत्मविद्या त्रयीरूपां उमारूपां नमाम्यहम् ।।8।।

- स्कन्द पुराण

Gurupurnima Mahotshv 2009

आशीस्

शांकरी ब्रह्मविद्येव मोहध्वान्तविदारिणी ।
समावेशकरी देवी जयति श्रीगुरोः कृपा ।।

— श्रीगुरु कृपा, मोहान्धकार को नष्ट करके, विशुद्ध आत्मस्वरूप में चेतना को प्रविष्ट कराने में समर्थ एक दिव्य शक्ति है; अतः शांकरी ब्रह्मविद्या के समान है। इस कृपा देवी की सदा विजय हो, विशेषतः इस श्रीगुरुपूर्णिमा महापर्व पर ।

ॐ इति

ईश्वरानन्दगिरि

तमसो मा ज्योतिर्गमय

संवित् साधनायन, अर्बुदाचल

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य

श्री स्वामी ईश्वरानन्द गिरिजी महाराज

संस्थापक- संवित् साधनायन, की अध्यक्षता में

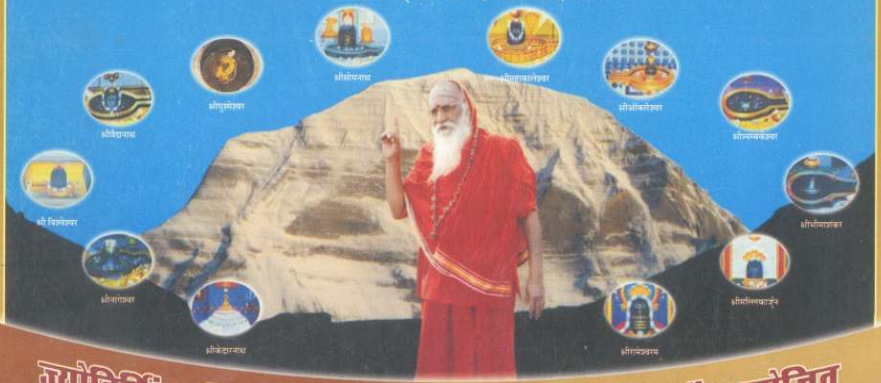

ज्योतिर्लिंग श्रीघुश्मेश्वर महादेव की दिव्य सन्निधि में आयोजित

7 जुलाई - 2009

श्रीगुरुपूर्णिमा संवित् सत्र का प्रसाद पत्र

आषाढ़ पूर्णिमा वि. सं. 2066

साधना वर्ष – गुणराशी चक्र

जैसे वर्ष भर की कालगति में सूर्य 12 राशीयों का संक्रमण करता है वैसा ही संवित् साधक की साधना प्रगति में 12 अध्यात्म गुणों का समावेश होना चाहिये। शास्त्रों में इस गुणसंपत्ति का प्रचुर उल्लेख है। साधक स्वयं अपनी रुचि, शक्ति के अनुसार इनमें से 12 गुणों का चयन कर संकल्प पूर्वक तीव्रता से एक-एक गुण का एक-एक मास में अनुष्ठान करे। यहाँ एक सरल संकलन का संकेत मात्र प्रस्तुत है।

1. वयो वृद्ध सेवा

रोज अपने घर के एवं आस-पास में परिचित परिवार के वयो वृद्धों को, जो अकेलेपन आदि से ग्रस्त हैं, किसी न किसी प्रकार से सहायता करना, स्नेह एवं सांत्वना देना ।

2. सत् शास्त्र सेवा

अध्यात्म शास्त्रों का नियमित गंभीर अध्ययन, विद्वानों से या स्वयं के प्रयास से। केवल पाठ करना या पढ़ना मात्र नहीं।

3. देवालय सेवा

प्रतिदिन किसी देवालय जाकर उसकी स्वच्छता, सुव्यवस्था आदि में स्वयं श्रमदान करना ।

4. सर्वभूत दया

मानव समुदाय के अलावा उससे जुड़े हुए सब प्रकार के प्राणी समुदाय के प्रति उपेक्षा या हीन दृष्टि को हटाकर, उनके हित के लिए कार्य करना।

5. सौम्यता

दिन भर के व्यवहार में चित्त को सात्विक रखने का प्रयास। उग्रता, विषाद आदि राजसिक एवं तामसिक भावों को दूर रखना ।

6. वाक् संयम

व्यग्र, व्यर्थ एवं असत्य वाणी का त्याग। प्रतिदिन कुछ समय सर्वथा वाक् व्यापार का त्याग, अर्थात् मौन।

7. क्षमा

कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार का अपराध जाने-अनजाने में करे तो, उस व्यक्ति के प्रति क्रोध की भावना एवं उसको दण्ड देने की प्रवृत्ति का त्याग।

8. कष्ट सहन

कर्तव्य निभाने में सहजतया जो कष्ट होता है, उसे बिना खिन्न हुए स्वीकारना। प्रकृति प्रदत्त शीतोष्ण आदि पीड़ा का विलाप रहित सहन करना, स्वेच्छा से धार्मिक कठिनाई को स्वीकारना ।

9. भोग त्याग

आहार, व्यवहार, विहार आदि में आवश्यक विषय सेवन करते हुए इससे अतिरिक्त अपनी विशेष पसन्द को पूरा करने वाले कुछ भोगों का संकल्प पूर्वक एवं निर्दिष्ट अवधि के लिए त्याग करना। जैसे मिष्ठान, सिनेमा या टीवी सीरियल, पान आदि का सेवन ।

10. असंगता

सभी प्रवृत्ति में उद्देश्य की तत्परता को कमजोर किए बिना, व्यवहार के विषय के साथ आसक्ति मय सम्बन्ध स्थापित करने से मन को रोकना - इस विचार के बल से कि "सभी विषय आगमापायी हैं, अस्थिर हैं और ईश्वर कार्यार्थ ही मेरे पास भेजे गये हैं।"

11. तीव्र प्रार्थना

सभी साधक ईश्वर प्रार्थना नित्य करते ही हैं। इससे अतिरिक्त, एक निर्धारित अवधि के लिए प्रतिदिन के व्यवहार के बीच जब कभी अवकाश मिले, तीव्रता पूर्वक एकाग्रता से प्रभु प्राप्ति के लिए बार बार प्रार्थना करने का प्रयास।

12. ईश्वर ध्यानाभ्यास

अपनी चेतना-आकाश में मात्र ईश्वर सन्निधि की धारणा, पाँच या दस मिनट के लिए किसी नाम रूप के माध्यम के बिना ईश्वर स्वरूपानुसंधान करने का प्रयास। दिन भर में इस का बार-बार अभ्यास।

Gurupurnima Mahotshv 2010

Gurupurnima
Mahotshv
2010

Gurupurnima Mahotshv 2011

श्रीवेदव्यासो विजयतेतराम्

श्रीगुरु पूर्णिमा - व्यास महोत्सव

विक्रम सं. 2068 जुलाई 13-15, 2011

श्रीसंवित्साधनाश्रय, फलोदी में आयोजित संवित्सत्र का

प्रसाद पत्र

प्रकाशक
संवित् साधनायन, अर्बुदाचल

तन्मे भवेत

परम पूज्य स्वामी श्री ईश्वरानन्द गिरिजी महाराज का

आशीस

फलवृद्धिपुरे पुण्ये संविन्नगरकीर्तिते ।
पंचशालायुतः संवित्-केन्द्र उद्यान-शोभितः ॥
भुवनाम्बासमेतश्री - संविदीश्वर - रक्षितः ।
तनोतु साधनाश्रयो दिव्यतां संविदाश्रमः ॥

'संविन्नगर' नाम से विख्यात फलवृद्धि (फलोदी) पुण्यक्षेत्र में एक संवित्-केन्द्र स्थापित है, जो पंचशालाओं से युक्त है और अमृत-उद्यान से शोभित है । वहाँ के मन्दिर में अधिष्ठित श्रीभुवनेश्वरी सहित श्रीसंविदीश्वर महादेव से वह स्थान सुरक्षित है । 'साधनाश्रय' नाम का वह संविदाश्रम चारों ओर दिव्यता को विकीर्ण करते हुये सदा विकसित हो ।

— ईश्वरानन्दगिरि

Gurupurnima Mahotshv 2011

शिष्य प्रार्थना
उपदेश की

प्रार्थयन्ते गुरुपन्त, शिष्याः मोक्षार्थि कारिणाः, उपदेशार्थिनः स्युरपि, त्वया तत्त्वोपदेशकाः
उपदेशार्थिन त्वया, कृपया मौन वेशिकाः ।

मौनोपदेशं कुरु कृपया, मोक्षोपदेशं कुरु त्वरया ॥ ध्रुव ॥
पञ्चक्लेशः स्यात् मम निर्विकल्प बुद्धि
त्वत्पादकमले पतितं मां पाहि ।
कर्मोपदेशं कुरु भगवन्, नैष्कर्म्योपदेशं कुरु स्वामिन् ॥ 1 ॥
दीक्षां दिव्यात्मीय दत्त्वा प्रबोधय
सुप्तात्मशक्तिं शक्तिं विवर्धय ।
योगोपदेशं कुरु करुणामय, ध्यानोपदेशं कुरु तन्मय ॥ 2 ॥
पदत्रयातीत ब्रह्मैक्य बोधक
माया मायातीत साक्षी प्रकाशक ।
वाक्योपदेशं कुरु श्रुतिधर, प्रणवोपदेशं कुरु यतीश्वर ॥ 3 ॥
मौनोपदेशं मोक्षोपदेशम्, कर्मोपदेशं नैष्कर्म्योपदेशम्
योगोपदेशं ध्यानोपदेशम्, वाक्योपदेशं प्रणवोपदेशम्
ब्रह्मोपदेशं कुरु शिवंकर, पूर्णोपदेशं कुरु गुरुवर ॥ 4 ॥

शिष्य प्रार्थना
संवित्श्री की

कदा वा त्वां दृष्ट्वा गुरुवर पदाम्भोजयुगलं
गृहीत्वा हस्ताभ्यां शिरसि नयने वक्षसि वहन् ।
समाश्लिष्याघ्राय स्फुटजलजगन्धान् परिमलान्
अलभ्यां ब्रह्माद्यैः मुदमनुभविष्यामि हृदये ॥

हे गुरुवर ! आप के दिव्य संवित् स्वरूप को हृदय में साक्षात् करके, उसके सत्ता-स्फुरता रूपी चरणकमल युगल को मैं अपने ज्ञान-वैराग्य हाथों में दृढ़तया ग्रहण कर, उसे अपने वक्षस्थल (आत्मानुस्मरण), नयन (अष्टमूर्ति अनुसंधान) एवं शिरोभाग (समाधि) में धारण करते हुये, अनावृत आनन्द रूपी पद्म के दिव्य सौरभ (अद्वैतवासना) को दीर्घतया सूंघने से प्राप्त निरतिशय सुख को, जो ब्रह्मा आदि देवों को भी अलभ्य है, मैं कब अनुभव करूंगा ?।

Gurupurnima Mahotshv 2012

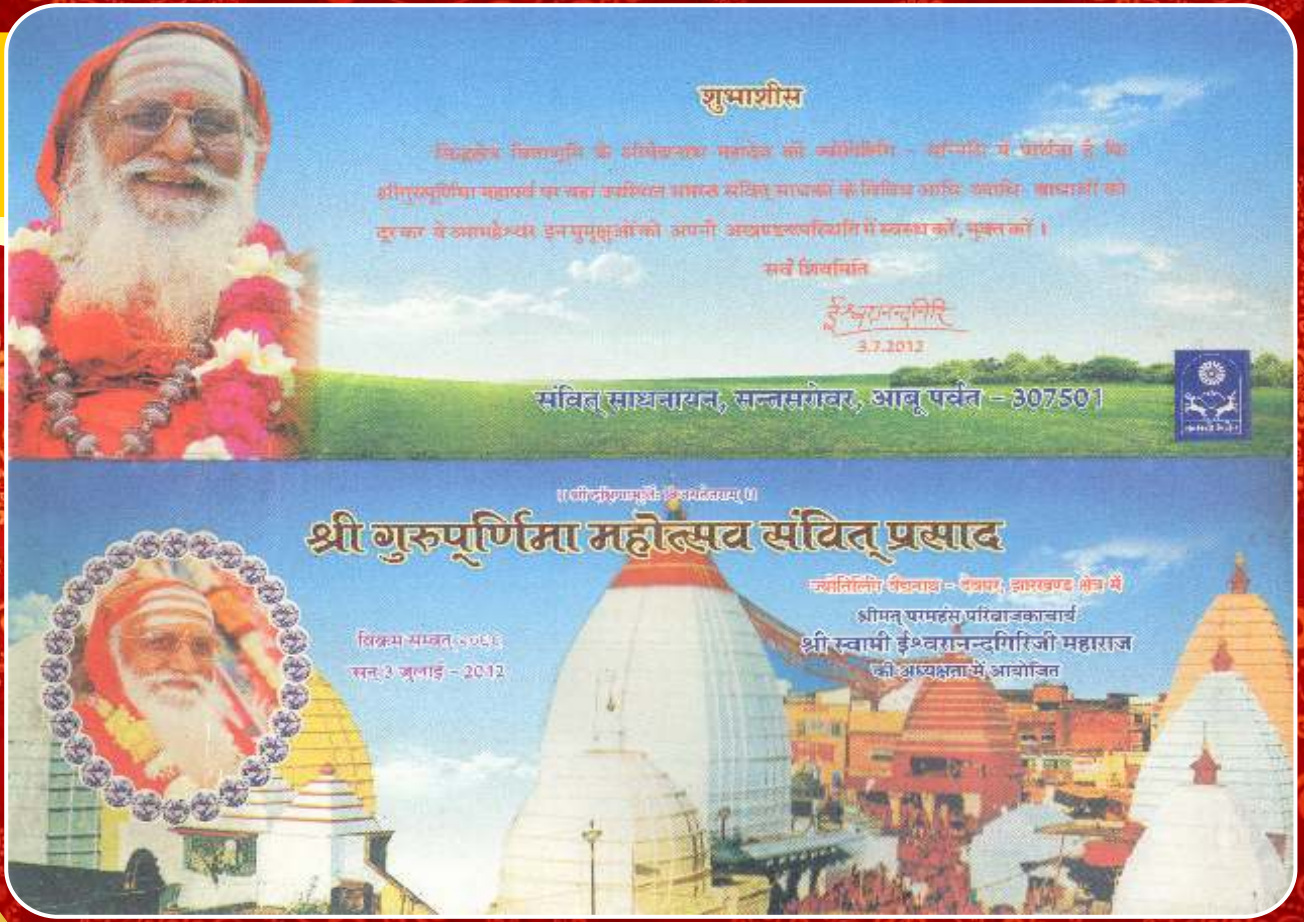

Gurupurnima Mahotshv 2012

श्रीवैद्यनाथ - प्रसाद - पंचकम्

पीतक्ष्मस्य स्वर्लिंगं बहुकृततपसे दत्तवान् रावणाय त्वं
हार्दे पीठे चिताख्ये भुवि हरिकृपया स्थापितस्तत् फलेन ।
विख्यातो वैद्यनाथ इति भव भुवने स्वप्रथालिंगभूतः
जाने नाहं कृत्यमार्गान्युपहतहृदयः पाहि शंभो प्रसीद ॥1॥

मातुर्गर्भस्थितेन स्वरचित-तुरितैः पीडया पीडितेन
स्वाधारस्थेनाक्षुमुक्त्वे तव भजनविधौ स्वीकृता या मया सा ।
मायाजालावृतत्वात् तवचरणरतिः विस्मृता च प्रतिज्ञा
कृतान्तर्यो पैशगधः शरणमुपगतो वैद्यनाथ प्रसीद ॥2॥

जाने नावाहनं ते स्तुतिमपि विविधां जाप्यमन्त्रं न जाने
पूजामुद्रां न जाने हर तव चरण ध्यानयोगं तपो वा ।
जानेहं केवलं त्वं भवनिधितरणे प्राणिनां प्रेरकोसि
नान्योपायस्त्वदन्यः स्मरहर कृपया वैद्यनाथ प्रसीद ॥3॥

लोकाचारैरनेकैर् विविधविषयकैः सज्जना या कुलास्ता
पूर्त्तिर्जातास्तथापि त्रिनयन हृदये चाचनैकावशिष्टा।
देहि श्रीवैद्यनाथ स्मरणमनुपलं मानसे चान्तकाले
ज्ञातव्योहं तवात्वत् शरणमुपगतो वैद्यनाथ प्रसीद ॥4॥

बहुकृतदुरितानां व्याधिसंपीडितानां
गतिमतिरहितानां शोकमोहार्दितानाम् ।
भवनिधिपतितानां मानवानां महेश
त्वमसि शरणमेको वैद्यनाथ प्रसीद ॥5॥

श्रीवैद्यनाथ स्मरणम्

पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने
सदावसन्तं गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधित पादपद्मं
श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि
श्रीवैद्यनाथं सततं स्मरामि ॥

वैद्यनाथ स्वामी भवरोगादवतु
ज्योतिर्लिंगभूतः चितामूर्तिर्जयतु ॥ध्रुव॥

हरिकरप्रतिष्ठितं अष्टांगुलमस्तकं
हार्दं शक्ति पीठस्थं वन्दे पातालगं
हार्दं शक्ति पीठस्थं वन्देष्ट सिद्धिदम् ॥1॥

गांगचाम्पतीरे झारखण्डक्षेत्रे
हरीतकी वनान्ते वैद्यनाथधामाख्ये
हरीतकी वनान्ते वैद्यनाथधामाख्ये ॥2॥

कामनार्थिं वं वं-नादपूरितालय
कामेश्वर हे गुरो शिष्यान् नः पालय
कामेश्वर रक्षितु साधकान् पालय ॥3

Gurupurnima Mahotshv 2013

Gurupurnima Mahotshv 2013

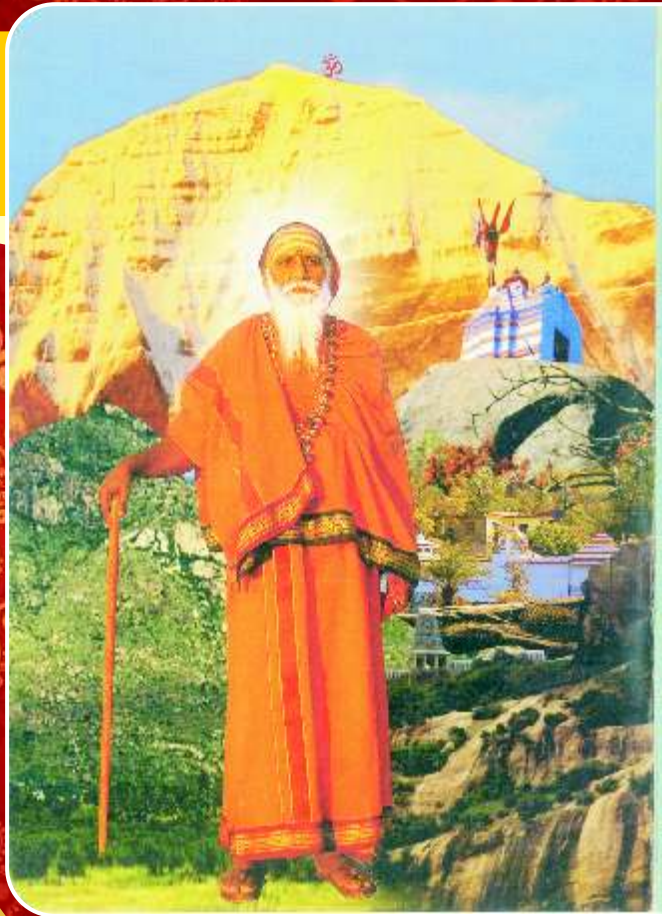

ॐ

"मेरा जीवन"

मूले सर्पगिरिं ध्याये भ्रुवि कैलास पर्वतम् ।
भ्रूमध्ये शोणशैलेन्द्रं अर्बुदाद्रिं सदा हृदि ॥

"मैं अपने जीवन मूलाधार में अर्धनारीश्वर - अधिष्ठित सर्पगिरि की धारणा करता हूं और मूर्धन्य ज्ञान में श्रीकैलास की । और भ्रूमध्य "आज्ञा" के स्तर में अरुणाचल का एवं हृदय में अर्बुदाचल का सदा निवास है।"

संविन्मयधराधर - चतुष्कोपरिनिर्मितम् ।
शिवभक्तिरसापूर्णं जीवनं मेऽस्तु शान्तिदम्॥

"(उपर्युक्त) चार संविन्मय-पर्वतों पर निर्मित मेरा जीवन शिवभक्तिरस से संपूर्णतया भरा हो और सर्वत्र सबको शान्ति प्रदान करने वाला हो।"

Gurupurnima Mahotshv 2014

ॐ

श्री शंकरालोक में दि. 10 से 12 जुलाई 2014
को आयोजित सत्र का

श्री गुरुपूर्णिमा- संवित्-प्रसाद

॥ श्री दक्षिणामूर्तये विद्महे ॥

प्रकाशक — संवित् साधनायन, कर्णावती केन्द्र

परम पूज्य परमहंस परिव्राजकाचार्य
स्वामी श्री ईश्वरानन्दगिरिजी
(संस्थापक, संवित् साधनायन) का

आशीर्वचन

परम पावन श्री गुरुपूर्णिमा महापर्व पर,
उमा की तपस्थली उमावरसद् ग्राम के
वटारण्य मध्य निर्मित इस संवित् केन्द्र के
भगवान भाष्यकार की भव्य सन्निधि-प्रेरणा को लेकर,
सभी संवित् साधकों को सप्रेम अभिनन्दन करते हुए,
प्रार्थना है कि अटूट ब्रह्मविद्या परंपरा के
आधारभूत जीवन-दृष्टिकोण के बल से
अपने अपने स्वधर्मपालन-क्षेत्र में
संवित्-संस्कृति का निर्माण करते रहें ।
आप की साधना श्रीगुरुशक्ति प्रसाद से सफल हो ।

इति
सस्नेह
शंकरालोक
12-7-2014
ईश्वरानन्दगिरि

Gurupurnima
Mahotshv
2014

अवतरण

अव्यक्त अनिर्वच अक्षर से
अज्ञात अरूप निरम्बर से
शिवमय करने सब सृष्टि को
उतरो उतरो उतरो
हे कृपा-पुंज उतरो
हे ब्रह्मनिष्ठ उतरो — हे संविद् गुरु उतरो ॥१

कल्मष का दलदल गहराता
आसक्ति मोह जल बरसाता
शुचिता से भरने कण-कण को
उतरो उतरो उतरो
हे पुण्य-पुंज उतरो
हे परमहंस उतरो — हे संविद् गुरु उतरो ॥२

वह सिंह-पुरुष है दीन हुआ
वह शौर्य धीर बलहीन हुआ
ऊर्जान्वित करने मानव को
उतरो उतरो उतरो
हे शक्ति-पुंज उतरो, हे पुरुषोत्तम उतरो, हे संविद् गुरु उतरो ॥३

कुंठित शोषित मानव मन में
मुरझाते जीवन उपवन में
मधुरस वर्षक बसन्त जैसे
उतरो उतरो उतरो
हे प्रीति-पुंज उतरो, हे लीलामय उतरो, हे संविद् गुरु उतरो ॥४

सद्गुरुदेवप्रणतिः

परतत्त्वलीनमनसे प्रणमद् भवबन्धमोचनायाशु ।
प्रकटितपरतत्त्वाय प्रणतिं कुर्मः सद्गुरुदेवाय ॥१॥

अज्ञानतिमिर-रवये प्रज्ञानाम्भोधिपूर्णचन्द्राय ।
प्रणताघ-विपिन-शुचये प्रणतिं कुर्मः सद्गुरुदेवाय ॥२॥

दीक्षाशिक्षणचतुर-व्यवहाराय प्रभूतकल्याणाय ।
दीक्षापावितजगते प्रणतिं कुर्मः सद्गुरुदेवाय ॥३॥

तारकविद्यादात्रे तारकपतिगर्वखर्वकाम्याय ।
तारजप-प्रवणाय प्रणतिं कुर्मः सद्गुरुदेवाय ॥४॥

भवसिन्धुपारयित्रे भवभक्ताय प्रणम्र-वश्याय ।
भवबन्धविरहिताय प्रणतिं कुर्मः सद्गुरुदेवाय ॥५॥

प्रणताय यतिवरैश्वर्यगणनाथेनाप्यसाध्यविघ्नहृते ।
गुणवशीकृतजगते प्रणतिं कुर्मः सद्गुरुदेवाय ॥६॥

धृतदेहाय नतावलितूर्ण-प्रज्ञा-प्रदानबोल्लासः ।
श्रीदक्षिणवक्त्राय प्रणतिं कुर्मः सद्गुरुदेवाय ॥७॥

सकलागमान्त-सारप्रकटन-दक्षाय नम्रपक्षाय ।
संवित् सुखरूपाय प्रणतिं कुर्मः सद्गुरुदेवाय ॥८॥

Gurupurnima Mahotshv 2015

|| श्री .... ||

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य

परमपूज्य श्री स्वामी ईश्वरानन्दगिरिजी महाराज

की अध्यक्षता में आयोजित

श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव

का पवित्र प्रसाद

संवित्धाम - जोधपुर, दिनांक : 31.07.2015, शुक्रवार

श्री गुरुजनों का आदेश

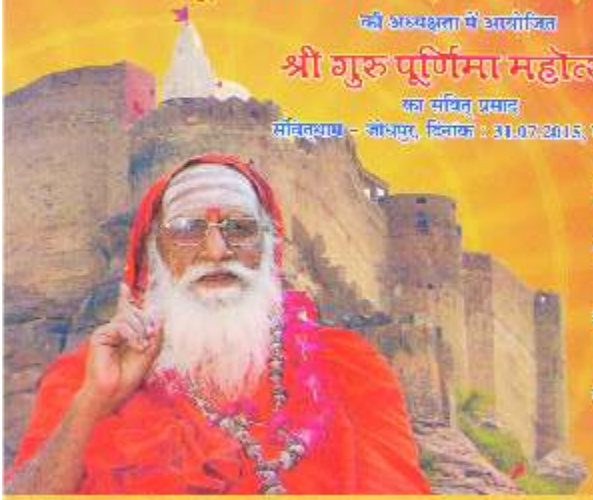

ॐ संगच्छध्वं संवदध्वं
सं वो मनांसि जानताम्॥
समानी व आकूतिः
समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो
यथा वः सुसहासति॥
-ऋग्वेद

GRACE

I asked God for strength,
God gave me difficulties to over come.
I asked for wisdom,
And God gave me problems to solve.
I asked for prosperity
And he gave me brains to work.
I asked for courage,
God gave me dangers to face.
I asked for love,
And he sent me troubled people to help.
I asked for favour,
God gave me opportunities.
I received nothing I wanted,
But had everything I needed.
My prayers have been answered.

अनुग्रह

मैंने भगवान से कहा, मुझे बल दें -
उन्होंने आपदाओं को भेजा, जिन्हें मुझे ही पार करना था।
मैंने बुद्धि की मांग की थी
उन्होंने समस्याओं को भेजा, सुलझाने के लिये।
मैंने समृद्धि की प्रार्थना की
और भगवान ने मुझे चुनौतियों को सौंपा, कठिन
परिश्रम से निभाने के लिये।
मैंने मांगा साहस,
और भगवान ने भेजी भयंकर परिस्थितियाँ।
मैंने प्रेम की याचना की -
और अब संतप्त जनों का समूह मुझसे सान्त्वना
की अपेक्षा लिये
मैंने सहायता मांगी,
तो भगवान ने अवसरों को मेरे हाथ आने दिया।
मैं ने जो जो मांगा था, उनमें से एक भी
उन्होंने नहीं दिया, पर मेरे लिये जो जो आवश्यक था
वह सब उपलब्ध हुआ।
उन्होंने प्रार्थना को नहीं, अपितु मेरे जीवन को
पूर्ण होने दिया।

Gurupurnima Mahotshv 2015

श्री वेदव्यास - ध्यान

व्याख्यामुद्रिकया लसत्करतलं वेदान्तपीठस्थितम्
वामे जानुतले दधानमपरं हस्तं सविद्यानिधिम्।
विप्रव्रातवृतं प्रसन्नमनसं पाथोरुहांगद्युतिम्
पाराशर्यमतीव - पुण्यचरितं व्यासं स्मरेत् सिद्धये।।

व्यास - कीर्तन

सत्रे सत्रे समाराध्यः साक्षात् सत्यवतीसुतः।।
(ध्रुव पद)
भस्मोद्धूलित - सर्वांगः, त्रिपुण्ड्रांकितमस्तकः।
रुद्राक्ष - मालाभरणः, कृष्ण द्वैपायनो मुनिः।।१।।

नमस्तस्मै मुनीशाय वेदान्ताम्बुज - भानवे।
वीतरागाय कवये व्यासायामित - तेजसे ।।२।।

सुमन्तुं जैमिनिं पैलं वैशम्पायनमेव च।
शुकं मध्ये गुरुं व्यासं वन्देहं मुनिमंडलम्।।३।।

श्री गुरु - प्रार्थना

ॐ अध्वनां अध्वपते प्र मा तर।
स्वस्ति मेस्मिन् पथि
ब्रह्मयाने भूयात्
(देवयाने भूयात्)
-वेद

श्री गुरु - शिवध्यान

आकर्णकृष्टे धनुषि ज्वलन्तं
दैवीं इषुं भास्वति सन्दधानम्।
ध्यायेन् महेशं गुरुराजवेषं
संविद्रथे योधतनुं युवानम्।।

Gurupurnima Mahotshv 2016

३ - परम गुरु प्रार्थना

[illegible] सुधासमुद्र [illegible] शिवानि[illegible]
[illegible] नरवेशोऽपि [illegible]
[illegible] वन्दे [illegible]
[illegible] गुरुवरं [illegible] नृसिंहाचलम्॥

[illegible] निजोदयमिति
[illegible] समन्तात् स्थित।
[illegible] गुरुवर [illegible]
[illegible] श्रीमन्नृसिंहाचलम्।

[illegible] गुरुवर [illegible]
[illegible] शान्तिर्भवेत्।
[illegible] प्रशममगमन्निर्विकल्पे समाधौ
[illegible] भवतु सततं [illegible]॥

श्रीगुरुपूर्णिमा उत्सव समिति
फलोदी
19.07.2016

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मलीन परमपूज्य
श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महामण्डलेश्वर
श्री स्वामी नृसिंहगिरिजी महाराज

श्रीगुरुपूर्णिमा-संवित् प्रसाद

परमहंस परिव्राजकाचार्य 'संवित साधनायन' संस्थापक

परम पूज्य श्रीस्वामी ईश्वरानन्दगिरिजी महाराज

की अध्यक्षता में फलोदी में
(सन् 2016, दिनांक 17 से 19 जुलाई तक)
आयोजित श्री गुरु सत्र में वितरित

श्री सन्यासी–गुरुपरंपरा–स्मरणम्

दक्षिणास्यं स्मराम्यादौ सनकादि चतुष्टयम्
देवर्षि च महर्षि च शुक गौडपद तथा।
गोविन्द भगवत्पाद तथानन्दगिरीश्वरम्
गिरीशानन्द मनिशं श्री नृसिंहगिरि भजे।

"सन्यासी गुरु परंपरा के आरंभ में मैं भगवान श्री दक्षिणामूर्ति का स्मरण करता हूं, उनके शिष्य सनक आदि चार कुमारों को, देवर्षि नारद महर्षि व्यास–शुकदेव–गौडपादाचार्य–गोविन्द पादाचार्य–श्री शंकर भगवत्पादाचार्य को, तथा गिरिनाम परंपरा प्रवर्तक ज्योतिर्पीठाधिपति आनन्द गिरि स्वामी का भी स्मरण करता हूं। इसी परंपरा में आगत स्वामी गिरीशानन्दजी महाराज और हमारे परमाराध्य गुरुदेव श्री नृसिंहगिरिजी महाराज का मैं सतत ध्यान करता हूं।"

ईश्वरानन्दगिरि

Gurupurnima Mahotshv 2016

1-श्री गुरु नमन

शिवस्वरूपोऽपि जगत्स्वरूपः
स्वात्मस्वरूपोऽपि परस्वरूपः ।
निर्गुणोऽपि यो नित्यमनित्यरूपः
तस्मै नमः श्री गुरवेऽद्भुताय ॥ 1

स्वाराज्य साम्राज्य पद प्रदायिने
नित्याय शान्ताय परात्परात्मने ।
कारुण्यपूरामृतवर्षि दृष्टये
श्री देशिकायामित तेजसे नमः ॥ 2

गुरुप्रसादात्स्व सुखी सदाहं
गुरुप्रसादाच्च यश श्रियोऽहम् ।
ऐश्वर्यदा तस्य दयाभिकांक्षी
तत्पादपद्मं हि सदाश्रयेऽहम् ॥ 3

नमाम्यहं श्री गुरुपादुकाद्वयं
वदाम्यहं श्री गुरुदेवनाम ।
करोम्यहं श्री गुरुपादपूजनं
भजाम्यहं तं सततं शरण्यम् ॥ 4

भवन्तु सर्वे गुरुदेवशिष्या
धर्मप्रिया पापपराङ्मुखाश्च ।
दया सदास्मासु चकास्ति यस्य
नमाम्यहं तं गुरुवर्यमीड्यम् । 5

2-श्रीदेशिक पादुका पंचकम्

उद्घाटिताद्वैत महेक्षणाभ्यां
निमीलित द्वैतविलोकनाभ्याम्
मोहान्धकारेऽपि विरोचनाभ्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम् ॥ 1

संसार दवानल घोरताप–
शान्त्यर्थपीयूष महाह्रदाभ्याम् ।
आश्वासितस्वं जनताजनाभ्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम् । 2

शास्त्र निषेधविधि–तत्त्वाभ्यां
विद्वत्सदः स्वान्त सुसेविताभ्याम् ।
भक्तिप्रवृन्दैः परिपूजिताभ्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम् ॥ 3

प्रभाप्रकाशाद्य सुसंस्तुताभ्यां
नैष्कल्यनादि पदसमीप्यम्
मुक्तिप्रदाभ्यां दिव्यपदाभ्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम् । 4

दौर्भाग्यदावाग्नि शिखाम्बुदाभ्यां
दुरीतलतौघविपाटिताभ्याम् ।
कृपाकटाक्षीकृतमादृशाभ्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्याम् ॥ 5

Gurupurnima Mahotshv 2017

श्री गुरुर्विजयते

ब्रह्मज्ञान-विवेक-निर्भरवपुः कान्त्याजगद्भासयन्
दृष्ट्या शन्तमया कृपा-प्रवणया तापत्रयं संहरन् ।
पीयूषद्रव-सिक्तया मधुरया वाचा च संमोदयन्
दीनोद्धार-परायणो विजयते कारुण्यपूर्णो गुरुः ।।

GLORY TO GURU

The Guru, at the highest level, appears to the advanced seeker, as the embodiment of Brahma-Jnana and viveka. His very luminous presence reveals the world in the Samvit Light. He bestows peace merely by his look, whose compassion deftly removes the triple afflictions of worldliness in the disciples. All devotees who gather around him, he enthralls with his sweet words of consolation and ambrosial upadesha of moksha.

Glory to the merciful Guru, ever intent on uplifting those that humbly take shelter in him.

PUBLISHED BY :
Samvit Sadhanayana
Santasarovar, Mt. Abu.

ॐ

श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव

सन् 2017 जुलाई 7 से 10 तक बंगलूरु में आयोजित

संवित् सत्र का प्रसाद-पत्र

The Samvit Prasada Patra of
Shri Guru Poornima Mahotsava
Bengaluru July 7th to 10th -2017

श्रीपरमहंस-गिरिसंन्यास-गुरुपरंपरा

ॐ

दक्षिणास्यं समारभ्यादौ सनकादि चतुष्टयम् ।
देवर्षिंच महर्षिंच शुकं गौडपदं तथा ।।१।।
गोविन्दं भगवत्पादं शिष्यमानन्दगिरिंच ।
गिरीशानन्दमनिशं श्रीनृसिंहगिरिं भजे ।। २।।

Gurupurnima Mahotshv 2017

श्री गुरु वन्दना

(श्री शंकरभगवत्पाद शिष्य श्री सुरेश्वर विरचित)

स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेदवृत्तिः
ध्यायं ध्यायं पशुपतिसुमाकान्तमन्तर्निषण्णम् ।।
पायं पायं सपदि परमानन्द-पीयूषधाराम्
भूयो भूयो निजगुरुपदाम्भोजयुग्मं नमामि ।।१।।

यस्माद् विश्वमुदेति यत्र निवसत्यन्ते यदप्येति यत्
सत्यज्ञानसुखस्वरूपमवधि-द्वैत-प्रणाशोज्ज्वलम् ।
यज्जाग्रत् स्वप्न-सुषुप्तिषु विभात्येकं विशोकं परम्
प्रत्यग् ब्रह्म तदस्मि यस्य कृपया तं देशिकेन्द्रं भजे ।।२।।

विश्वानन्द - तुषार - सिंधुरखिलज्ञानस्फुलिंगानलः
प्रच्छन्नासिलता च कोशकुहरे द्वैतभ्रमच्छेदिनी ।
मोहध्वान्तविभाकरः परिलसन् वेदान्तसीमन्तिनी
मौलिस्थानमणिःसदा विजयते संविन्मयः पूरुषः ।।३।।

OBEISANCE TO SAMVIT GURU

Dwelling upon the inevitable sorrows and afflictions of life - like birth, death, disease and dread, I developed dispassion to worldly attainments. That led me to look inward, where I felt the presence of the Lord of all creation. I contemplated constantly. This yielded a superior unearthly joy and I drank deep of this ambrosia. All this, I recognize, was due to the grace of my spiritual Guru, whose holy feet I bow down to again and again. (1)

The ultimate Reality is that from which entire creation arises, where it is held in existence and to which it goes back at time of dissolution. Scriptures describe It as the essence of Truth-Knowledge-Bliss, unrestricted by duality and hence deathless. Masters have experienced it as the sorrowless, perfect soul that is revealed in the states of waking, dream and deep sleep. I have realized that as my indwelling cosmic soul, because of the sheer grace of my matchless Guru whom I worship ceaselessly. (2)

The Supreme Soul is an ocean of bliss of which all the joys of the world are like sprays. It is that primordial fire from which emanate the sparks of all knowledge we experience. It is the shining sword to cut the illusions of duality, inside the scabbard of a human body or in the armoury of all scriptures. It is a resplendent sun that destroys all wrong perceptions. On the crown of the Vedantic knowledge of Brahman, like a crest-jewel, ever gleams this essence of Paramatma Samvit, my holy Master. (3)

Collected from Work of Shree Sureshwaracharya
Direct Disciple Of Shri Adi Shankar Bhagawatpadacharya

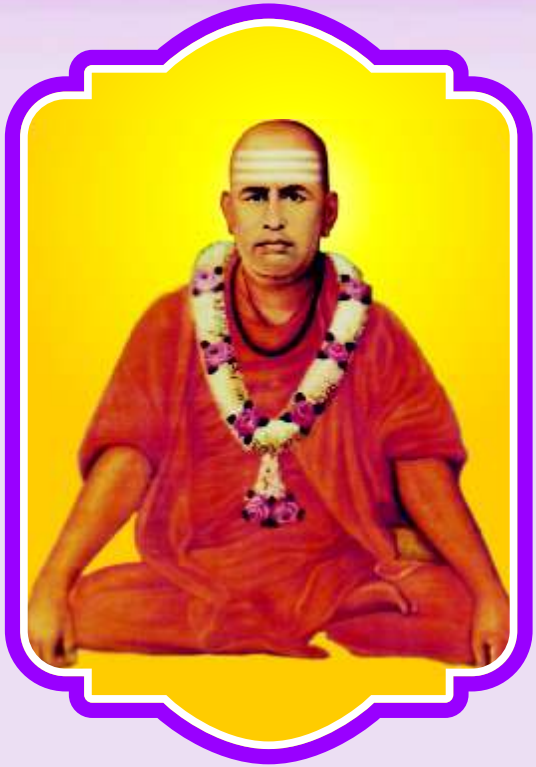

म.मं. स्वामी श्री नृसिंहगिरीजी महाराज

परम पूज्य स्वामी श्री ईश्वरानंदगिरीजी महाराज

परम पूज्य स्वामी संवित्
सोमगिरीजी महाराज

॥ श्री यतिश्वर महादेव ॥

परम पूज्य स्वामी संवित्
नारायणगिरीजी महाराज

गुरु पूर्णिमा संवित् प्रसाद

इश्वराश्रय आश्रम उडवारीया स्वरुपडांज

दि. 11-12-13 जुलाई 2022